भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2889

29 मार्च, 2022 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुष दवाओं पर उन्नत शोध करने के लिए प्रयोगशालाएं

2889. श्री नीरज डांगी:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने देश में आयुष दवाओं पर उन्नत शोध करने के लिए नवीनतम तकनीकियों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) सरकार द्वारा आयुष चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए उठाए जा रहे सुधारात्मक उपायों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार द्वारा इन प्रयोगशालाओं पर खर्च की गई राशि का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क): सरकार ने देश में आयुष औषधों पर उन्नत अनुसंधान के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी से सुसज्जित प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं। संबंधित ब्यौरा **संलग्नक-I** पर है।

(ख): आयुष चिकित्सा पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए सुधारात्मक उपायों का ब्यौरा **संलग्नक-II** पर है।

(ग): इन प्रयोगशालाओं पर सरकार द्वारा खर्च की गई राशि का ब्यौरा **संलग्नक-III** पर है।

*****

<u>संलग्नक-I</u>

देश में आयुष औषधों पर उन्नत अनुसंधान के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी से सुसज्जित प्रयोगशालाओं का ब्यौरा।

I. आयुष मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच), गाजियाबाद की स्थापना एएसयूएंड एच औषधों के लिए भेषजसंहितागत मानकों और फार्मायूलरी के विशेष विवरण को निर्धारित करके एएसयू एंड एच औषधों के निर्धारण के लिए की गई है।

II. आयुर्वेद

क. आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में एक स्वायत्त संगठन केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) की देश भर में पांच अनुसंधान प्रयोगशालाएं हैं जो आवश्यकतानुसार **इन हाउस अनुसंधान कार्यकलाप** करती हैं, नामत:-

i) क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे (**आरएआरआई, पुणे**)
ii) कैंप्टन श्रीनिवास मुर्ती केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेन्नई **(सीएसएमसीएआरआई, चेन्नई)** (एनएबीएल द्वारा प्रत्यायित सुविधा)
iii) क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर (**आरएआरआई, ग्वालियर**)
iv) केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता (**सीएआरआई, कोलकाता**)
v) केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी (**सीएआरआई, झांसी**)

ख. आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में स्वायत्त संगठन आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर में विभिन्न पूर्व नैदानिक और नैदानिक अनुसंधान कार्य करने के लिए संस्थान के अभिन्न अंग के रूप में पैथोलॉजी, जैव रसायन, सूक्ष्म विज्ञान, भेषजविज्ञान, भेषजीय रसायन, भेषजअभिज्ञान प्रयोगशाला जैसी आधुनिक प्रयोगशालाएं हैं।

ग. आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में स्वायत्त संगठन राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर की औषध आविष्कार और विकास इकाई (डीडीडीयू) के अधीन एक प्रयोगशाला है।

घ. आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में स्वायत्त संगठन अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली ने अस्पतालों में अत्याधुनिक प्रयोगशाला सुविधाएं स्थापित की हैं। संस्थान में सुसज्जित पैथोलॉजी, सूक्ष्म विज्ञान और ब्लड बैंक स्थापित किया गया है। संस्थान में एचपीटीएलसी, एएएस सहित गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला और भेषजअभियान प्रयोगशाला की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

III. यूनानी

क. आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में स्वायत्त संगठन केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम) अपने अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से यूनानी चिकित्सा पर अनुसंधान को निरंतर मजबूत कर रही है और उसे बढ़ावा दे रही है। परिषद के अनुसंधान केंद्र जीसी-एमएस-एमएस, एचपीटीएलसी, एचपीएलसी, एएएस, आईसीपी-ओईएस, रिसर्च माइक्रोस्कोप आदि जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है।

ख. राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बंगलौर की एनआईयूएम बंगलौर में चार अनुसंधान प्रयोगशालाएं और एक नैदानिक प्रयोगशाला है।

IV. औषध नीति अनुभाग

औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियमावली 160-क से ञ के अंतर्गत, आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी औषधों के परीक्षण के लिए 61 निजी औषध परीक्षण प्रयोगशालाओं को मंजूरी दी गई है। ब्यौरा **संलग्नक-IV** पर देखा जा सकता है।

V. सिद्ध

क. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद, जो वैज्ञानिक और औद्योगिकी अनुसंधान संगठन (एसआईआरओ) है, में निम्नलिखित विभाग अनुसंधान और विकास के लिए अत्याधुनिक अवसंरचना सहित आधुनिक उपकरणों तथा सुविधाओं से सुसज्जित हैं: नैदानिक अनुसंधान, जैव रसायन, पैथौलॉजी, रेडियोलॉजी, रसायन, भेषज अभिज्ञान इत्यादि।

ख. लिक्विड क्रोमैटोग्राफी के साथ मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एमएस), ऑप्टिकल एमिशन स्पेक्ट्रोमेट्री के साथ प्रेरक रूप से जुड़ा प्लाज्मा (आईसीपी-ओईएस), हाई परफॉर्मेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (एचपीएलसी), हाई परफॉर्मेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी (एचपीटीएलसी), फुली ऑटोमेटेड एनालाइजर, रियल टाइम पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन्स (आरटी-पीसीआर), रैंडम एक्सेस बायो-केमिकल एनालाइजर, अल्ट्रासाउंड कलर फ्लो डॉपलर (सीएफडी), हेमेटोलॉजी एनालाइजर, पाउडर एक्स-रे डिफ्रेक्टोमीटर (पीएक्सआरडी), आदि जैसी अनुसंधान और विकास सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आधुनिक उपकरणों की खरीद की गई है।

ग. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) का अनुसंधान कार्यक्रम मुख्य रूप से नैदानिक अनुसंधान पर केंद्रित है जिसमें सिद्ध औषधों की सुरक्षा और प्रभावकारिता अध्ययन, मूल भूत सिद्धांतों का विधिमान्यकरण, औषध मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण, औषधीय पादपों का सर्वेक्षण और खेती तथा साहित्यिक अनुसंधान शामिल हैं।

संलग्नक-II

आयुष चिकित्सा पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे सुधारात्मक उपायों का ब्यौरा।

I. भारतीय चिकित्सा और होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच),

पीसीआईएम एंड एच द्वारा निर्धारित एएसयू एंड एच औषधों के लिए, भेषजसंहितागत मानक और फार्मायूलरी के विशेष विवरण औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और इसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार इनमें शामिल एएसयू एंड एच औषधों की पहचान, शुद्धता और क्षमता को जांचने के लिए अधिकारिक सार संग्रह के रूप में कार्य करते हैं।

निर्धारित गुणवत्तायुक्त मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए, पीसीआईएम एंड एच एएसयू एंड एच औषधों के परीक्षण के लिए केंद्रीय औषध परीक्षण सह-अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में भी कार्य करता है।

II. आयुर्वेद

क. केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) अपने आईईसी कार्यक्रम के जरिए निम्नलिखित कार्य कर रही है:-

i) आयुर्वेद के जरिए रोगों के निवारण और स्वास्थ्य संवर्धन पर अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में आम लोगों के लिए ब्रोशर के प्रकाशन द्वारा इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से लोगों के बीच आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाना।

ii) इन्हें राष्ट्रीय/राज्य स्तर के आरोग्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों, प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, वेबिनार, सार्वजनिक व्याख्यानों इत्यादि के साथ-साथ सीसीआरएएस के पहुंच संबंधी कार्यक्रमों नामत: अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) अनुसंधान कार्यक्रम, जनजातीय स्वास्थ्य परिचर्या अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी), पूर्वोत्तर योजना आदि के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों में व्यापक रूप से वितरित किया जाता है। इसके अलावा, ये ब्रोशर परिषद की वेबसाइट में भी व्यापक प्रसार के लिए अपलोड किए जाते हैं।

iii) परिषद जनता की व्यापक उपयोगिता के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापनों और परिषद की वेबसाइट के माध्यम से भी चिकुनगुनिया, डेंगु, फ्लू जैसी बीमारी आदि जैसे रोगों की रोकथाम और प्रबंधन के लिए एडवाइजरी भी जारी करती है।

iv) परिषद आयुष अनुसंधान पोर्टल नामक एक वेबसाइट का रख रखाव करती है जिसमें अनुसंधान की व्यापक उपयोगिता और दृष्यता के लिए सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों से संबंधित प्रत्येक प्रकाशित अनुसंधान सूचना व्यवस्थित रूप से अपलोड की जाती है। अभी तक 34,324 शोध पत्र/सार पोर्टल पर अपलोड किए गए हैं। परिषद की वेबसाइट में सामान्य रूप से आयुर्वेद संबंधी सूचना भी उपलब्ध है और अन्य महत्वपूर्ण वेबसाइटों के साथ हाइपरलिंक्ड है जो व्यापक रूप से उपयोगिता के लिए सूचना प्रदान करता है।

v) परिषद ने लोगों के बीच अनुसंधान परिणामों का प्रसार करने के लिए जेडीआरएएस और जेआरएएस नामक दो इलेक्ट्रॉनिक जनरल पब्लिक डोमेन में निशुल्क आरंभ किए हैं।

vi) परिषद अभी तक लगभग 300 पुस्तकों, मोनोग्राफों, तकनीकी रिपोर्टों का प्रकाशन कर चुकी है और बड़े पैमाने पर आयुर्वेद के लाभ और अनुसंधान परिणामों के प्रसार के लिए इनका विक्रय अथवा वितरण किया जा रहा है।

vii) परिषद ने चार डिजीटल प्लेटफार्म नामत: आयुष मैन्यूस्क्रिप्ट एडवांसड रिपोजिटरी (एएमएआर), शोकेस ऑफ आयुर्वेदिक हिस्टॉरिकल इमप्रिंट्स (एसएएचआई), ई-मेडिकल हेरिटेज एक्सेशन (ई-मेधा) और रिसर्च मैनेजमेंट इनफॉमेंशन सिस्टम (आरएमआईएस) को भी विकसित किया है।

viii) आजादी का अमृत महोत्सव- इंडिया **@**75**"** के अंतर्गत आयुष मंत्रालय ने देश के नागरिकों के कल्याण हेतु राष्ट्रव्यापी क्रियाकलाप आंरभ किए हैं। आयुष रोग निरोधी औषधियों अर्थात् संशमनी वटी और अश्वगंधा वटी तथा वृद्ध जनसंख्या पर विशेष बल देते हुए आहार और जीवनशैली पर दिशानिर्देशों का राष्ट्रव्यापी वितरण 30 अगस्त**,** 2021 से आरंभ हुआ है जो 15 अगस्त 2022 तक चलेगा।

ix) सीसीआरएएस के अधीन संस्थानों द्वारा 15 हजार की जनसंख्या के लिए आयुष रक्षा किट और कोविड -19 की रोकथाम के लिए दिशानिर्देशों का 1 फरवरी, 2022 से 31 मार्च, 2022 तक वितरण।

ये सभी क्रियाकलाप इसके 30 क्षेत्रीय संस्थानों के माध्यम से किए जाते हैं।

ख. आईटीआरए जामनगर

कोविड 19 महामारी में, आईटीआरए जामनगर ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए निम्नलिखित पहल की है।

i) आईटीआरए, जामनगर ने कोविड महामारी में लोगों के घरों तक आयुर्वेद के माध्यम से स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं मुहैया कराने के लिए जामनगर नगर निगम के सहयोग से धन्वंतरि रथ की सेवाएं आरंभ की हैं।

ii) घरों में कोविड रोगियों का उपचार तथा उन्हें आयुष मंत्रालय द्वारा अनुशंसित स्वय:देखभाल हेतु विभिन्न रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय पर बल।

iii) कोविड रोगियों और कोरोना वारियर को आयुर्वेदिक औषधियों का वितरण।

iv) आम लोगों को अंग्रेजी और गुजराती में गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कोविड 19 पर एडवाइजरी वितरित करना।

ग. पूर्वोत्तर आयुर्वेद और होम्योपैथी संस्थान, (एनईआईएएच), शिलांग ने समय-समय पर आम लोगों को स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं प्रदान करके, विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और जागरूकता शिविरों के आयोजन द्वारा आयुर्वेद तथा होम्योपैथी के क्षेत्र में आयुष चिकित्सा पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए महत्वपूर्ण उपाय किए हैं। संस्थान टीवी और रेडियो टॉक शो के माध्यम से आयुर्वेद, होम्योपैथी और योग की आयुष चिकित्सा पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रोत्साहित भी कर रहा है।

III. होम्योपैथी

क. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान

i) राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान जो ब्लॉक जीई, सेक्टर 3, साल्ट लेक में स्थित है, 100 बिस्तर वाले अस्पताल सहित 13 ओपीडी चला रहा है।

ii) इसके अतिरिक्त ग्रामीण रोगियों की सेवा के लिए एनआईएच पश्चिम बंगाल में और आस-पास 10 परिधीय ओपीडी चला रहा है।

iii) नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, नरेला जो एनआईएच कोलकाता का विस्तार केंद्र है, का नरेला के आस-पास के रोगियों के लिए एक ओपीडी है।

iv) "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार **"**आयुष रोग निरोधी औषधियों तथा वृद्ध जनसंख्या पर विशेष बल देते हुए आहार और जीवनशैली पर दिशानिर्देशों का वितरण**"** अभियान क्रियान्वित किया गया है। इस अभियान के अंतर्गत एनआईएच कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए आम लोगों, कार्यालय के कर्मचारियों, फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों को आर्सेनिक एलम्ब 30 सी और आहार तथा जीवनशैली संबंधी दिशानिर्देश निशुल्क वितरित कर रहा है।

v) एनआईएच, आयुष मंत्रालय द्वारा चलाई गई कोविड-19 हेल्पलाइन के जरिए आम लोगों को सेवा मुहैया करा रहा है।

vi) एनआईएच ने कोविड-19 महामारी के दौरान होम्योपैथी के लिए टेली मेडिसीन परामर्श भी दिया है।

vii) एनआईएच ने ईएसआई अस्पताल, चेन्नई के सहयोग से कोविड वार्ड में भर्ती कोविड-19 रोगियों को सहायक उपचार के रूप में होम्योपैथी औषधियों से उपचार किया है।

viii) लोगों को होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के बारे में जागरूक बनाने के लिए आरोग्य मेलें, गंगा सागर मेले, स्कूल हेल्थ चेकअप आदि में भाग लेता है।

ix) होम्योपैथी पर आईईसी सामग्री का वितरण, बुलेटन और समकक्ष समीक्षित पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन।

उपर्युक्त के अतिरिक्त एएचएमआईएस भी लागू किया गया है जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लोगों के साथ बेहतर संपर्क सुनिश्चित करेगा।

IV. राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम)

भारत सरकार राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यम से आयुष चिकित्सा पद्धतियों के संवर्धन और विकास के लिए देश में राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित स्कीम क्रियान्वित कर रही है। राष्ट्रीय आयुष मिशन में अन्य बातों के साथ-साथ आयुष चिकित्सा पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने के लिए निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैं।

(i) आयुष्मान भारत के तहत आयुष स्वास्थ्य एवं वेलनेस केंद्र।
(ii) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं का सह-स्थापना।
(iii) मौजूदा एकल राजकीय आयुष अस्पतालों का उन्नयन।
(iv) मौजूदा सरकारी/पंचायत/सरकारी सहायता प्राप्त आयुष औषधालयों का उन्नयन/नए एकल औषधालयों की स्थापना।

(v) 50 /30 /10 बिस्तरों तक के एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना।

(vi) राजकीय आयुष अस्पतालों, सरकारी औषधालयों और राजकीय/सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थागत आयुष अस्पतालों को आवश्यक औषधियों की आपूर्ति।

(vii) आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम।

(viii) राज्य सरकार के स्नातक-पूर्व और स्नातकोत्तर शिक्षण संस्थानों का अवसंरचनात्मक विकास।

(ix) उन राज्यों में नए आयुष कॉलेजों की स्थापना, जहां सरकारी क्षेत्र में आयुष शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता अपर्याप्त है।

(x) व्यवहार परिवर्तन संचार (बीसीसी)/सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी)।

(xi) आयुष ग्राम।

V. यूनानी

क. केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

परिषद ने विभिन्न तरीकों से देश में यूनानी चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न उपाय किए हैं, उदाहरण स्वरूप परिषद के 18 नैदानिक संस्थानों/इकाइयों द्वारा संचालित सामान्य ओपीडी, आरसीएच ओपीडी, जराचिकित्सा ओपीडी, एनसीडी क्लीनिक इत्यादि के माध्यम से उपचार प्रदान करना। परिषद आरोग्य स्वास्थ्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों और प्रदर्शनियों इत्यादि के माध्यम से भी यूनानी चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बना रही है। इसके अतिरिक्त स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम और नैदानिक चल अनुसंधान कार्यक्रम, एससीएसपी/टीएसपी चल स्वास्थ्य कार्यक्रम परिषद द्वारा यूनानी चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, परिषद के विभिन्न केंद्रों के माध्यम से विभिन्न रोगों के निवारक पहलुओं के लिए जागरूकता पैदा करने तथा रोगियों को उपचार प्रदान करने के लिए अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले गांवों का चयन किया गया है।

ख. राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान

i) आयुष मंत्रालय विभिन्न वेबिनार, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि के लिए वित्त पोषण करता है और अधिदेशित है। इसके अतिरिक्त आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों को आंरभ किया गया है। राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान ऐसे सभी कार्यक्रमों का हिस्सा है।

VI. सिद्ध

क. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) सिद्ध चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान कर रही है और सोरायसिस, एक्जिमा, श्वसन संबंधी विकारों, मस्कुलो-स्केलेटल विकार, पुरुष और महिला प्रजनन रोग, गैर-संचारी रोगों, बाल रोगों, वेक्टर जनित रोगों के लिए आंतरिक उपचारों और बाहरी उपचारों जैसे वर्मम, फोमेटेशन, थोक्नम आदि के जरिए स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करती है। सिद्ध चिकित्सा पद्धति नॉन इनवेसिव तरीकों और समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से उच्च चिकित्सीय लाभों के साथ विभिन्न रोगों के लिए मूल्यवान उपचार प्रदान करती है। सिद्ध औषधियां दीर्घकालिक लाभ प्रदर्शित कर रही हैं जो लागत प्रभावी भी हैं।

ख. गैर-संचारी रोग ओपीडी, जरा चिकित्सा ओपीडी, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य परिचर्या ओपीडी, वर्मम, थोक्नम और बोन सेंटिग तथा योगम ओपीडी के माध्यम से लोगों को विशेष उपचार प्रदान किया जा रहा है।

ग. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद ने 62 आईएमआर परियोजनाएं प्रदान की है और इनमें से 8 आईएमआर परियोजनाएं पूरी हो गई है, 17 परियोजनाओं के लिए पीईएमसी मंजूरी प्रतीक्षित है और 37 आईएमआर परियोजनाएं चल रही हैं।

घ. सीसीआरएस द्वारा 10 पेंटेंट फाइल किए गए हैं जिन्हें पेंटेंट जर्नल में प्रकाशित किया गया है।

ङ. सीसीआरएस द्वारा 54 पुस्तकें और 536 वैज्ञानिक अनुसंधान लेख प्रकाशित किए गए हैं।

च. तीन राज्यों और दो संघ राज्य क्षेत्रों में सात सीसीआरएस संस्थानों/इकाइयों के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम (एसआरपी) क्रियान्वित किया गया है। 13 ग्रामों को इसमें शामिल किया गया है ।

छ. थेरन सॉफ्टवेयर विकसित किया गया था और आयुष-हॉस्पीटल मैनेजमेंट इन्फॉरमेंशन सिस्टम (एएचएमआईएस) में उन्नत किया गया है।

ज. आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने अनुसंधान परिषद द्वारा विकसित आरएंडडी प्रौद्योगिकी और उत्पादों के वाणिज्यिकरण के लिए एक्सलरेटिंग ग्रोथ ऑफ न्यू इंडिया एनोवेशन (एजीएनआई) के साथ सक्रिय सहयोग से पहल की है।

झ. सीसीआरएस लोगों के लाभ के लिए सिद्ध चिकित्सा पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए विभिन्न संगोष्ठियां/कार्यशालाओं/सम्मेलनों का सक्रिय रूप से आयोजन कर रहा है।

ञ. लोगों के लाभ के लिए सभी संस्थानों/इकाइयों में विभिन्न रोगों से संबंधित स्वास्थ्य जागरूकता शिविर संचालित किए जा रहे हैं। सीसीआरएस ने राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रिंट मीडिया, आडियों जिंगल और विडियों वृत्तचित्र के माध्यम से लोगों के बीच सिद्ध चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए कई कार्यक्रम आरंभ किए हैं।

ट. आरोग्य मेलों/प्रदर्शनियों में सिद्ध चिकित्सा पद्धति के माध्यम से विभिन्न रोग दशाओं और उनके प्रबंधन से संबंधित आईईसी सामग्री वितरित की जाती है। देश में सिद्ध चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए आईईसी के लिए विशेष रूप से 11 पेंम्फलेट प्रकाशित किए गए हैं और तमिल, अंग्रेजी, हिंदी, मलयालम, तेलुगू और कन्नड़ भाषाओं में परिचालित किए जा रहे हैं।

VII. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (आईसी)

क. मंत्रालय ने आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय क्षेत्रक योजना (आईसी योजना) विकसित की है जिसके तहत आयुष मंत्रालय, भारतीय आयुष निर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने में सहायता देता है; आयुष चिकित्सा पद्धति के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संवर्धन, विकास और पहचान दिलाने में मदद देता है; हितधारकों के बीच बातचीत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष का बाजार विकसित करने के लिए बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना करके अकादमिक और अनुसंधान को बढ़ावा देता है तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता और रुचि बढ़ाने और उसे सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला/संगोष्ठियों का आयोजन करता है।

ख. आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेदिक औषधियों के निर्यात को बढ़ावा देने की दिशा में निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

i. मंत्रालय ने विदेशी राष्ट्रों के साथ पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए अलग-अलग देशों के साथ 25 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।

ii. सहयोगात्मक अनुसंधान/अकादमिक सहयोग शुरू करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 32 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

iii. विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 14 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

iv. आयुष मंत्रालय ने 34 बाहरी देशों में 38 आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना के लिए सहायता दी है।

v. कारपोरेट कार्य मंत्रालय के सहयोग से आयुष मंत्रालय के तहत "आयुष निर्यात संवर्धन परिषद" को 04.01.2022 को कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 8 (4) के तहत पंजीकृत किया गया है ताकि विदेशों में आयुष उत्पादों के पंजीकरण, विदेशों में बाजार अध्ययन और अनुसंधान गतिविधियां चलाने में आने वाली बाधाओं से निपटा जा सके।

vi. आयुष मंत्रालय, अपनी अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति/अध्येतावृत्ति कार्यक्रम के तहत भारत के प्रमुख संस्थानों में आयुष पाठ्यक्रम पढ़ने वाले विदेशी नागरिकों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

vii. आयुर्वेद के जरिए कोविड-19 के निवारण पर नैदानिक अनुसंधान अध्ययन के लिए लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन (एलएसएच एंड टीएम), यूके और फ्रैंकफर्टर इनोवेशनज़ेंट्रम बायोटेकनोलोजी जीएमबीएच (एफआईजेड), फ्रैंकफर्ट जर्मनी के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

viii. आयुष मंत्रालय ने लोगों को कोविड से बचाने और स्वस्थ रहने के बारे में अंग्रेजी के साथ-साथ 08 अन्य विदेशी भाषाओं में एडवाइजरीज जारी कीं।

ix. आयुष मंत्रालय बाहरी देशों के नियामकों को आयुष शैक्षिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

संलग्नक-III

सरकार द्वारा प्रयोगशालाओं पर खर्च की गई राशि का विवरण

क्र. सं.	**संस्थान/अनुसंधान संस्थान का नाम**	**2021-22 की निधि (लाख रु. में)**
I	**आयुर्वेद**	
1.	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस),	
क.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे (आरएआरआई, पुणे)	400.33 रु.
ख.	कैप्टन श्रीनिवास मूर्ति केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेन्नई (सीएसएमसीएआरआई, चेन्नई) (एनएबीएल मान्यता प्राप्त सुविधा)	411.67 रु.
ग.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर (आरएआरआई, ग्वालियर)	603.26 रु.
घ.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता (सीएआरआई, कोलकाता)	1011.06 रु.
ड़.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी (सीएआरआई, झांसी)	444.70 रु.
2.	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर	
क.	प्रयोगशाला की स्थापना	5 करोड़ रु.
ख.	अन्य गतिविधियों के लिए	2 करोड़ रु.
II	**यूनानी**	
1.	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)	164.05 करोड़ रु.
2.	राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान	
क.	प्रयोगशाला उपस्कर / उपकरण	2020-21 (23.03.2022 तक)- 31,53,150/- रूपये
ख.	रसायन	2020-21 (23.03.2022 तक)- 16,21,006/- रूपये
III	**औषध नीति अनुभाग**	
क.	**29 राज्य औषधि परीक्षण केंद्रों को वित्तीय सहायता**	2019-20- 1420.11 लाख रु.
ख.	**2 संघ राज्य क्षेत्रों को वित्तीय सहायता**	2019-20- 152.80 लाख रु.
IV	**सिद्ध**	
क.	**सीसीआरएस के विभिन्न विभागों के लिए प्रयोगशालाओं के लिए उपकरणों की खरीद**	3.58 करोड़ रु.